नालंदा: ज्ञान की अमर लौ

GameX Yt

क्या आप जानते हैं कि इतिहास में एक ऐसी लाइब्रेरी भी थी जें आक्रमणकारियों द्वारा आग लगाए जाने के बाद हफ्तों और महीनों तव धधकती रही? यह कोई काल्पनिक कहानी नहीं, बल्कि भारत के सबस महान और प्राचीन ज्ञान केंद्र की एक दर्दनाक हकीकत है।

सदियों पहले, प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय अपने भव्य स्वरूप मे मुस्कुराता था, जहाँ विशाल स्तूप और नक्काशीदार पत्थर उसकी भव्यत की गवाही देते थे। सुबह की पहली किरण के साथ यहाँ का शांत वातावरण मंत्रोच्चार और पक्षियों की चहचहाहट से गूंज उठता था।

विश्वभर से आए हज़ारों खोजी छात्र और विद्वान आचार्य यहाँ के विशाल परिसरों में एकत्र होते थे। वे खुले मैदानों और वृक्षों की छांव में बैठकर दर्शन, विज्ञान, खगोलशास्त्र और अध्यात्म जैसे गूढ़ विषयों पर गंभीर और शांतिपूर्ण वाद-विवाद करते थे।

नालंदा का असली गौरव धर्मगंज नामक उसका विशाल पुस्तकालय क्षेत्र था, जिसमें रत्नसागर, रत्नोदधि और रत्नरंजक नाम की तीन बहुमंजिला इमारतें थीं। इन भव्य भवनों की अलमारियों में लाखो दुर्लभ हस्तलिपियाँ और प्राचीन ग्रंथ सुरक्षित रखे थे, जो सदियों के ज्ञा का खजाना थे।

तभी वर्ष 1193 ईस्वी में, समय का चक्र बदला और बख्तियार खिलजी के क्रूर आक्रमणकारियों की सेना ने नालंदा के शांत और पवि द्वारों पर धावा बोल दिया। हथियारों की झंकार और चीख-पुकार ने सदियों की शांति को पल भर में मलबे में तब्दील करना शुरू कर दिया।

क्रूरता की हद पार करते हुए आक्रमणकारियों ने नालंदा की अमूल्य धरोहर, उसके विशाल पुस्तकालयों में आग लगा दी। देखते ही देखते, आसमान में काले धुएं का गुबार छा गया और ज्ञान की सदियों पुरानी पूंजी धधकती लपटों में विलीन होने लगी।

इतिहास की कुछ लोकप्रिय कहानियों में ऐसा दावा किया जाता
कि किताबों की संख्या इतनी अधिक थी कि यह पुस्तकालय महीनों त
जलता रहा। हालांकि, आधुनिक इतिहासकारों के बीच इस समयावधि
को लेकर गहरा विवाद है, क्योंकि उस दौर के प्रत्यक्ष और समकालीन
लिखित प्रमाण बेहद सीमित हैं।

विवाद चाहे जो भी हो, पर सच यही है कि उस भयंकर आग ने मानवता के एक बहुत बड़े और अनमोल ज्ञान के हिस्से को हमेशा के लि भस्म कर दिया। चारों तरफ फैली राख और जले हुए पन्ने नालंदा के स्वर्णिम युग के अंत की मूक गवाही दे रहे थे।

आज सदियों बाद, नालंदा के वे विशाल परिसर केवल ईंटों और पत्थरों के खंडहरों के रूप में बचे हैं। डूबते सूरज की लालिमा जब इन लाल ईंटों पर पड़ती है, तो ऐसा लगता है जैसे अतीत का गौरव अपनी कहानी खुद बयां कर रहा हो।

नालंदा के ये ऐतिहासिक खंडहर आज भी भारत की महान ज्ञान परंपरा की याद दिलाते हैं। वे पूरी दुनिया को यह मूक संदेश देते हैं कि इमारतें भले ही ढह जाएं, लेकिन शिक्षा, सत्य और ज्ञान की अमर लौ को कभी मिटाया नहीं जा सकता।